प्रश्न ३३—महमूद गजनवी कौन था ? भारत पर उसके आक्रमणों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

अथवा

महमूद गजनवी ने भारत पर कितनी बार आक्रमण किये ? उसके आक्रमणों का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा ?

महमूद का प्रारम्भिक जीवन

महमूद गजनी के शासक सुबुक्तगीन का पुत्र था। महमूद का जन्म ९७१ ई० में हुआ। महमूद धीरे-धीरे सभी विद्याओं में चतुर हो गया, अपने पिता के शासन काल में वह खुरासान का शासक था। महमूद ने सिंहासनारूढ़ होते ही गजनी के राज्य को खूब बढ़ाया। उसकी विजयों का हाल सुनकर खलीफा ने उसे यमीनुद्दौल की उपाधि दी जिससे उसका हौसला बढ़ा। डा० ईश्वरीप्रसाद के शब्दों में, "अपने राज्य की आंतरिक व्यवस्था को सम्पन्न कर महमूद ने भारत की अतुल सम्पत्ति एवं भारत में सर्वव्यापी मूर्तिपूजा ने उसकी विजयाकांक्षा को उद्दीप्त कर दिया था।" भारतवर्ष पर प्रतिवर्ष आक्रमण करने का उसने संकल्प किया और इस संकल्प के अनुसार उसने १००० ई० से लेकर १०२६ ई० तक सत्रह बार भारत भूमि को आक्रांत किया।

महमूद के भारतीय आक्रमण

सीमावर्ती प्रदेशों पर आक्रमण

महमूद का सर्वप्रथम आक्रमण १००० ई० में भारत की सीमा के कुछ नगरों एवं दुर्गों पर हुआ। विजित स्थानों पर उसने अपने शासक नियुक्त किये और विपुल धन लेकर वह गजनी लौट गया।

जयपाल पर आक्रमण

महमूद का दूसरा आक्रमण सन् १००१ ई० में जयपाल के राज्य पर हुआ। पेशावर में भीषण युद्ध हुआ जिसमें हिन्दुओं की पराजय हुई और पन्द्रह सहस्र हिन्दुओं का वध कर, उनके शवों से पृथ्वी को गलीचे की तरह ढंककर और उन्हें

हिंसक पक्षियों का भोज्य बनाकर" मुसलमानों ने विजयोल्लास प्रकट किया। इस पराजय से अपमानित होकर जयपाल ने आत्महत्या कर ली।

भीरा तथा अन्य नगरों पर आक्रमण

महमूद का तीसरा आक्रमण भीरा नगर पर तथा चौथा आक्रमण मुलतान पर हुआ। मुलतान को जीता और उतबी के अनुसार, "वहाँ की जनता से उनके पापों का प्रायश्चित करने के लिये बीस सहस्र दरहम वसूल किये।"

सेवकपाल पर आक्रमण

महमूद का पाँचवाँ आक्रमण आनन्दपाल के पुत्र सेवकपाल पर हुआ। वह पराजित हुआ और कारागार में डाल दिया गया। महमूद ने चार लाख दरहम दण्ड के रूप में वसूल किया।

आनन्दपाल पर आक्रमण

महमूद का छठाँ आक्रमण जयपाल के पुत्र तथा लाहौर के शासक आनन्द पाल पर १००८ ई० में हुआ। आनन्दपाल ने अन्य राजाओं का संघ बनाया और एक विशाल सेना के साथ महमूद की सेना के साथ घमासान युद्ध किया। मुसलमानों की पराजय निश्चित-सी हो गई थी, परन्तु तभी आनन्दपाल के हाथी के अकस्मात बिगड़ जाने से उसकी सेना में भगदड़ मच गई और महमूद को विजय प्राप्त हुई। इस विजय के पश्चात् महमूद ने भागड़ा में स्थित नगरकोट के दुर्ग पर आक्रमण किया। "हिन्दुओं ने जब टिड्डी दल के समान शत्रु सेना को आते देखा तो भयभीत होकर उन्होंने दुर्ग का द्वार खोल दिया और बाज के सामने कबूतर के समान या विद्युत के सम्मुख वर्षा के समान वे भूमि पर गिर पड़े।" इस दुर्ग से महमूद को भारी सम्पत्ति प्राप्त हुई।

थानेश्वर पर आक्रमण

नगरकोट के बाद महमूद के कई छोटे-छोटे आक्रमण हुए, परन्तु १०१४ ई० में थानेश्वर पर किया गया आक्रमण अधिक महत्वपूर्ण था। थानेश्वर पर महमूद का अधिकार हो गया और उसने नगर तथा मन्दिरों को जी भर कर लूटा।

कन्नौज की विजय

डा० ईश्वरी प्रसाद का कथन है कि भारत में महमूद की इन अद्वितीय विजयों से उसका यश समस्त मुसलमान संसार में फैल गया। अब उसने पूर्वी भारत की प्रमुख राजधानी कन्नौज पर आक्रमण हेतु सन् १०१८ ई० में गजनी से प्रस्थान किया। मार्ग में वह बुलन्दशहर पहुँचा। वहाँ के शासक ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली, फिर वह मथुरा की ओर बढ़ा। उसकी आज्ञा से देवालय भूमिसात कर दिये गये और शहर को खूब लूटा गया।

इसके पश्चात् वह एक विशाल सेना के साथ कन्नौज की ओर बढ़ा जहाँ के शासक राज्यपाल ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। विजेता ने कन्नौज के हजारों मन्दिरों को जी भर लूटा।

कालिंजर पर आक्रमण

डा० ईश्वरी प्रसाद के शब्दों में, "परिहार शासक राज्यपाल के निर्विरोध आत्मसमर्पण को राजपूत गौरव पर कलंक समझकर अन्य राजपूत नरेशों के हृदय